मुहर-ए-नबूवत

क़ाज़ी मो॰ सुलैमान मनसूरपूरी

अनुवाद

मुश्ताक़ अहमद नदवी

प्रकाशक

दारुलहदीस कटिहार, बिहार

विषय-सूची

अनुवादक की बात 7

प्रस्तवाना 9

अध्यायः 1 मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की जीवनी 11

नबूवत 13

मुसलमानों का वतन छोड़ना 15

सन 5 नबूवत 15

सन 6 नबूवत 15

सन 7 नबूवत 15

सन 10 नबूवत 16

सन 11 नबूवत 17

सन 12 नबूवत 17

सन 13 नबूवत 17

हिजरत 19

सन 1 हिजरी या 14 नबूवत 19

सन 2 हिजरी या 15 नबूवत 20

सन 3 हिजरी या 16 नबूवत 20

सन 4 हिजरी या 17 नबूवत 21

सन 5 हिजरी या 18 नबूवत 21

सन 6 हिजरी या 19 नबूवत 21

राजाओं को इसलाम का निमंत्रण 23

सन 6 हिजरी 23

क़बीलों का मुसलमान होना 23

सन 8 हिजरी या 20 नबूवत 31

सन 9 हिजरी या 21 नबूवत 31

आपके द्वारा लड़े गए युद्ध 33

सन 10 हिजरी या 22 नबूवत 33

सन 11 हिजरी 34

ख़ुतबा 35

अध्यायः 2 आपका परिवार 37

उम्मुल मोमिनीन ख़दीजा (रज़ियल्लाहु अंहा) 38

उम्मुल मोमिनीन सौदा (रज़ियल्लाहु अंहा) 38

उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ियल्लाहु अंहा) 39

उम्मुल मोमिनीन हफ़सा (रज़ियल्लाहु अंहा) 39

उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब बिंत ख़ुज़ैमा (रज़ियल्लाहु अंहा) 40

उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ियल्लाहु अंहा) 40

उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब बिंत जहश (रज़ियल्लाहु अंहा) 41

उम्मुल मोमिनीन जुवैरिया (रज़ियल्लाहु अंहा) 41

उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा (रज़ियल्लाहु अंहा) 42

उम्मुल मोमिनीन मैमूना (रज़ियल्लाहु अंहा) 43

उम्मुल मोमिनीन सफ़ीया (रज़ियल्लाहु अंहा) 44

अध्यायः 3 आपका आचरण 45

धैर्य तथा सहनशीलता 46

शिष्टाचार और सहजता 47

दानशीलता और उदारता 48

शर्म व हया 48

दया और प्रेमभाव 49

रिश्ते-नाते का ख़ायल 49

न्याय तथा संतुलन 50

सच्चाई और अमानतदारी 50

पाक दामनी 51

दुनिया के मोह से मुक्त व्यक्तित्व 52

इबादत 53

आम व्यवहार 54

क्षमा और दया 54

अध्यायः 4 आपकी शिक्षाएँ 56

अपना सुधार 56

माता-पिता की बात मानना 57

रिश्तेदारों के साथ व्यवहार 58

लड़कियों का पालन-पोषण 58

अनाथों की परवरिश 58

शासकों की बात मानना 58

दयाभाव 59

भीख माँगने की बुराई 59

आपसी बरताव 59

ज्ञान का महत्व 60

दास-दासी और सेवक के साथ बरताव 61

अंत दुआ 62

अनुवादक की बात

मानव जाति को सत्य और मुक्ति का मार्ग दिखाने वाले महान इनसान और अल्लाह के अंतिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की जीवनी पर क़ाज़ी मो• सुलैमान मनसूरपूरी के द्वारा उर्दू भाषा में लिखी गई दो किताबों 'रहमतुल लिल-आलमीन' और 'मुहर-ए-नबूवत' को जो ख्याति और मान्यता प्राप्त हुई, वह बहुत कम किताबों के हिस्से में आई है। 'रहमतुल लिल-आलमीन' में प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के जीवन और मिशन का विस्तारपूर्वक बखान है, तो 'मुहर-ए-नबूवत' में बहुत ही संक्षिप्त वर्णन। परन्तु, दोनों ही पुस्तकें अपने-अपने स्थान पर हैं बड़ी महत्वपूर्ण।

इसी महत्व के मद्देनज़र, मैं आज 'मुहर-ए-नबूवत' का हिंदी अनुवाद पेश करने का सौभाग्य प्राप्त कर रहा हूँ; ताकि ताकि उर्दू के साथ-साथ हिंदी जगत भी इससे लाभ उठा सके। अनुवाद के समय मेरे सामने 'मुहर-ए-नबूवत' का वह उर्दू संस्करण था, जो 2012 में 'मकतबा अल-फ़हीम' मऊनाथ भंजन से प्रकाशित हुआ है। उसके पृष्ठ (23) में कुछ हाशिए (टिप्पणियाँ) भी थे, जिन्हें मैंने पाठकों की आसानी के लिए असल किताब में शामिल कर लिया है और ब्रैकेट के अंदर लिख दिया है। मैंने इस बात का पूरा प्रयास किया है कि कोई कठिन शब्द न आने पाए, ताकि कम पढ़े-लिखे लोग भी

आसानी से समझ सकें। अल्लाह इस किताब को हमारे लिए लाभदायक बनाए और हमें अपने नबी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के जीवन चरित्र को अपनाने का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन!

मुश्ताक़ अहदम नदवी

7 मई 2019

प्रस्तावना

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ، وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ- اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ، وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ.

अल्लाह की प्रशंसा तथा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर दरूद भेजने के बाद मैं यह बताना चाहता हूँ कि यह पुस्तिका कायनात के सरदार प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के व्यक्तित्व के सौंदर्य और सद्गुणों को उतना ही दिखला सकती है, जितना सूर्य के प्रकाश को कोई कण! लेकिन मैंने देखा कि लोग विश्वस्त विद्वानों की बड़ी-बड़ी किताबों को नहीं पढ़ते और जानकारी के अभाव में अंधेरे में पड़े रहते हैं। आशा है कि इस पुस्तिका को पढ़कर मुसलमानों के दिल में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का प्रेम तथा अनुसरण का जज़्बा विकसित होगा और अज्ञानता के परदे किसी हद तक उठ जाएँगे। इस पुस्तिका का प्रत्येक वाक्य प्रमाणित रिवायत से लिया गया है और सागर को गागर में भरने का प्रयास किया गया है।

अल्लाह तआला इस छोटे से प्रयास को क़बूल फ़रमाए तथा इसका सवाब मेरे पिताश्री क़ाज़ी अहमद शाह साहब (अल्लाह उनपर कृपा करे एवं उन्हें क्षमा करे) के कर्मपत्र में लिख दे।

''رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۖ إِنَّكَ أَنتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ''

(क़ाज़ी) मो• सुलैमान (अल्लाह उसका सहायक हो।)

अध्यायः 1

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की जीवनी

हमारे नबी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्द-ए-मनाफ़ (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं। अदनान से इक्कीसवीं पीढ़ी में आकर पैदा हुए। अदनान चीलीसवीं पीढ़ी में हज़रत इसमाईल (अलैहिस्सलाम) की विख्यात संतान था। हज़रत इसमाईल (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के परम मित्र हज़रत इबराहीम (अलैहिस्सलाम) के बड़े बेटे थे। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सोमवार के दिन रबीउल अव्वल महीने की नौ तारीख़ को पैदा हुए। अभी माँ के पेट में थे कि पिता की मृत्यु हो गई। जब छह साल के हुए तो माता भी चल बसीं। आपकी माता का नाम आमिना है। उनका नसब तीन पीढ़ी ऊपर जाकर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि अलैहि व सल्लम) के दादिहाल से जा मिलता है। जब आप आठ साल दो महीने दस दिन के हुए, तो दादा का निधन हुआ। अबू तालिब, जो आपके पिता अब्दुल्लाह का सगा भाई था, संरक्षक बना। आप तेरहवें साल में चचा के साथ शाम की यात्रा में गए थे, परन्तु रास्ते से ही वापस आ गए। जवान

होकर कुछ दिनों व्यवसाय करते रहे। पच्चीस वर्ष की आयु में ख़दीजा (रज़ियल्लाहु अंहा) से शादी की। फिर अपना समय अल्लाह की वंदना तथा लोगों की भलाई के कामों में बिताते रहे। पैंतीस साल की आयु में जब क़ुरैश क़बीले के अंदर काबा की दीवार में हजर-ए-असवद को लगाने के विषय में विवाद हुआ, तो सबने आपको सच्चा तथा अमानतदार जानकर न्यायकर्ता घोषित किया।

नबूवत

चालीस साल एक दिन के हुए तो वह्य (प्रकाशना) आई कि आप अल्लाह के रसूल हैं। ख़दीजा, अली (जो आपके चचेरे भाई थे और जिनकी आयु दस साल थी), अबू बक्र सिद्दीक़ (जो आपके मित्र थे) और ज़ैद बिन हारिसा (जो आपके मुक्त किए हुए दास थे) (रज़ियल्लाहु अंहुम) अविलंब मुसलमान हो गए। फिर अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अंहु) के प्रयास से उसमान बिन अफ़्फ़ान, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, साद बिन अबू वक़्क़ास, तलहा और ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु अंहुम) मुसलमान हुए। उनके बाद अबू उबैदा बिन जर्राह, अबू सलमा, अरक़म, उसमान बिन मज़ऊन, अब्दुल्लाह बिन मसऊद, उबैदा बिन हारिस, सईद बिन ज़ैद, यासिर, अम्मार बिन यासिर और बिलाल (रज़ियल्लाहु अंहुम) मुसलमान हुए। स्त्रियों में ख़दीजा (रज़ियल्लाहु अंहा), नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पुत्रियँ और उनके बाद उम्मुल फ़ज़्ल (अब्बास रज़ियल्लाहु अंहु की पत्नी) मुसलमान हुईं। फिर (अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अंहु) की बेटी असमा तथा (उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अंहु की बहन) फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अंहुमा) मुसलमान हुईं।

तीन बरस तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) चुपके-चुपके लोगों को इसलाम सिखलाते रहे। फिर खुल्लम-खुल्ला सिखलाने लगे। जहाँ कोई खड़ा-बैठा मिल जाता या कोई मजमा नज़र आता, वहीं जाकर इसलाम के बारे में

बताने लगते। मक्का वाले अब मुसलमानों को सताने लगे। उनको इस बात का दुःख था कि जो भी मुसलमान हो जाता है, मूर्ति-पूजा को त्याग देता है। मुसलमान दो बरस तक एक से बढ़कर एक दुःख झेलते रहे। फिर उन्होंने तंग आकर मक्के से चले जाने का इरादा कर लिया।

मुसलमानों का वतन छोड़ना

सन 5 नबूवत

नबूवत के पाँचवें साल के रजब महीने में सबसे पहले उसमान बिन अफ़्फ़ान (रज़ियल्लाहु अंहु) घरबार छोड़कर अपनी पत्नी रुक़य्या (रज़ियल्लाहु अंहा) को, जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की दूसरी पुत्री हैं, साथ लेकर हबशा की ओर चल पड़े। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया थाः "अल्लाह के नबी लूत (अलैहिस्सलाम) के बाद उसमान पहला व्यक्ति है, जिसने अल्लाह की राह में घरबार छोड़ा है।" समुद्र तट तक पहुँचते-पहुँचते उनको और पाँच स्त्रियाँ और बारह पुरुष जा मिले। उनके बाद और भी बहुत-से मुसलमान हबशा गए। उनमें जाफ़र तय्यार (रज़ियल्लाहु अंहु) भी थे, जो अली मुर्तज़ा (रज़ियल्लाहु अंहु) के सगे भाई हैं।

सन 6 नबूवत

इस साल नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के चचा हमज़ा (रज़ियल्लाहु अंहु) और उनके तीन दिन बाद उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अंहु) मुसलमान हुए। मुसलमान अब तक छुप-छुपकर नमाज़ें पढ़ा करते थे, लेकिन इसके बाद काबा में जाकर पढ़ने लगे।

सन 7 नबूवत

इसी साल क़ुरैश ने आपस में एक प्रतिज्ञा-पत्र तैयार किया कि "कोई व्यक्ति मुसलमानों के साथ लेनदेन और रिश्ता-नाता न करे। क़बीला बनू हाशिम के साथ भी लेनदेन और रिश्ता-नाता बंद; क्योंकि वह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का साथ नहीं छोड़ता।"

इस अत्याचार के कारण प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और बनू हाशिम क़बीले के सब लोग एक पहाड़ी की घाटी (शेब-ए-अबी तालिब) में बंद रहे। दुश्मन, खाने-पीने की वस्तुएँ भी अंदर जाने न देते। घाटी के अंदर बच्चे जब भूख के मारे रोते, तो उनके रोने की आवाज़ नगर तक सुनाई देती। कोई व्यक्ति तरस खाता, तो थोड़ा बहुत अनाज छुप-छुपाकर रात को पहुँचा देता। इन सारी कठिनाइयों के बावजूद नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के पवित्र नाम और सच्चे धर्म को बराबर फैलाते रहे।

सन 10 नबूवत

इसी साल नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ताइफ़ क्षेत्र में इसलाम का प्रचार-प्रसार करने गए। जब आप कुछ कहने के लिए खड़े होते, तो लोग पत्थर मारा करते। आप लहूलुहान हो जाते। लहू बह-बहकर जूते में जम जाता और पाँव से जूता उतारना कठिन हो जाता। एक दिन आपको इतनी चोटें आईं कि बेहोश होकर गिर पड़े। ज़ैद बिन हारिसा (रज़ियल्लाहु अंहु), जो साथ थे, आपको उठाकर बस्ती से बाहर ले गए। मुँह पर पानी छिड़कने से होश आया, तो वहाँ से चले आए और फ़रमायाः "अगर यह लोग मुसलमान नहीं

होते, तो न हों। इनके बच्चे ज़रूर अल्लाह को एक मानने लगेंगे।" चुनांचे आठ बरस के बाद सारा ताइफ़ मुसलमान हो गया था।

सन 11 नबूवत

प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रास्तों और लोगों के आने-जाने के स्थानों पर जाया करते और आने-जाने वालों को समझाते थे। एक दिन आपको कहीं से कुछ लोगों की बातचीत की आवाज़ सुनाई दी। उधर गए, तो पता चला कि वहाँ मदीने के छह व्यक्ति रुके हुए थे। आपने उन्हें इसलाम के बारे में बताया और समझाया, तो वे मुसलमान हो गए।

सन 12 नबूवत

1. इसी साल 27 रजब को, 51 वर्ष पाँच महीने की आयु में आपको मेराज हुई और मुसलमानों पर पाँच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ हुईं। इससे पहले फ़ज्र और अस्र की दो नमाज़ें पढ़ी जाती थीं।
2. हज के दिनों में 18 व्यक्ति मदीने से मक्का आए। उन्होंने आपके हाथों पर इसलाम ग्रहण किया। आपने उनके साथ मुसअब बिन उमैर (रज़ियल्लाहु अंहु) को मदीना भेज दिया कि लोगों को इसलाम सिखाएँ। इस पवित्र धरती में इसलाम ख़ूब फला-फूला। मुसअब (रज़ियल्लाहु अंहु) के प्रयासों से एक साल के अंदर बनू नज्जार और बनू अशहल के सारे लोग तथा अन्य क़बीलों के बहुत सारे लोग मुसलमान हो गए।

सन 13 नबूवत

1. इसी साल नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से मदीना चलने का आग्रह किया गया और आपने उसे स्वीकार भी कर लिया। मदीने वालों ने वचन दिया कि हम इसलाम पर जमे रहेंगे और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का अनुसरण तथा सहायता करेंगे।
2. जब मक्का के दुश्मनों ने सुना कि इसलाम मक्का से बाहर फैल रहा है, तो उन्होंने आपकी हत्या का इरादा कर लिया। एक रात उन्होंने आपके घर को घेर लिया, लेकिन आप उनके घेरे से साफ़ निकल गए।

हिजरत

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) घर से निकलकर तीन दिन तथा तीन रात सौर नामी एक गुफ़ा के अंदर रहे। अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अहुं) भी साथ थे। रबीउल अव्वल मास की पहली तारीख़ तथा सोमवार के दिन गुफा से निकले। दो ऊँट यात्रा के लिए उपस्थित थे। एक पर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अंहु) सवार हुए और दूसरे पर अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अंहु) के दास आमिर बिन फ़ुहैरा तथा रास्ते की ख़बर रखने वाला एक व्यक्ति। यह सब लोग मदीने की ओर चल पड़े। जब दुश्मनों को आपके जाने की सूचना मिली, तो उन्होंने उस व्यक्ति के लिए बड़े-बड़े इनाम निर्धारित किए, जो आपको पकड़ लाए या सर काट लाए। इनाम के लालच में बहुत-से लोगों ने पीछा किया, मगर दो व्यक्ति आप तक पहुँचे। एक सुराक़ा बिन मालिक, जो अपने अपराध की माफ़ी लेकर वापस आ गया और दूसरा बुरैदा असलमी, जिसके साथ सत्तर सवार थे। वह आपके मुखमंडल को देखते तथा आपकी बात सुनते ही मुसलमान हो गया और आपके साथ आगे को चला गया।

सन 1 हिजरी अथवा 14 नबूवत

1. प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मदीना पहुँचते ही अल्लाह की इबादत के लिए मस्जिद बनाई। दीवारें कच्ची ईंटों की थीं और छत पर खजूर के पत्ते डाले गए थे।
2. ज़ुहर, अस्र तथा इशा की नमाज़ में अब तक दो रकातें पढ़ी जाती थीं। यहाँ चार-चार रकातें निर्धारित हुईं।
3. मदीने के यहूदियों और आस-पास रहने वाले क़बीलों से शांति तथा मित्रता के समझौते भी किए गए।
4. मक्का से आने वाले मुहाजिरों का मदीने के रहने वाले अंसार से भाईचारा स्थापित किया गया। ये धर्म के आधार पर बनने वाले भाई एक-दूसरे से सगे भाइयों से अधिक प्यार करते थे तथा अपनी जायदादें तक बराबर बाँट लेते थे।

सन 2 हिजरी अथवा 15 नबूवत

1. इसी वर्ष नमाज़ के लिए अज़ान देने की शुरूआत हुई।
2. मुसलमान अल्लाह के आदेश से काबा की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ने लगे। अब तक बैतुल मक़दिस की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ते थे।
3. रमज़ाम मास के रोज़े फ़र्ज़ हुए।

सन 3 हिजरी अथवा 16 नबूवत

इसी साल ज़कात फ़र्ज़ हुई, जिसका अर्थ यह है कि धनवान् मुसलमान एक साल के अंतराल के बाद अपने धन का चालीसवाँ भाग निर्धनों को दान किया करें।

सन 4 हिजरी अथवा 17 नबूवत

इसी साल मुसलमानों पर शराब पीना हराम हुआ।

सन 5 हिजरी अथवा 18 नबूवत

इसी साल स्त्रियों को परदा करने का आदेश हुआ।

सन 6 हिजरी अथवा 19 नबूवत

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) काबे के दर्शन के लिए मक्का आए। अभी मक्का से सात कोस की दूरी पर थे कि क़ुरैश ने आपको आगे बढ़ने से रोक दिया। आप ठहर गए। मगर ठहरने का लाभ यह हुआ कि क़ुरैश से निम्न बातों पर समझौता हो गयाः

1. दस वर्षों तक सुलह रहेगी। आपस में आना-जाना तथा लेनदेन जारी रहेगा। जो क़बीला चाहे मुसलमानों से मिल जाए और जो क़बीला चाहे क़ुरैश से मिला रहे।
2. मुसलमान अगले साल आकर काबा में नमाज़ पढ़ सकेंगे।
3. अगर क़ुरैश का कोई व्यक्ति मुसलमान होकर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास जा पहुँचे, तो उसे क़ुरैश के पास वापस भेज दिया जाएगा और अगर कोई मुसलमान इसलाम छोड़कर क़ुरैश से जा मिले, तो उसे वापस नहीं भेजा जाएगा। यह बात सुनकर मुसलमान घबरा उठे। लेकिन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हँसकर इसे भी स्वीकार कर लिया।

क़ुरैश का ख़याल था कि इस शर्त से डरकर आगे कोई व्यक्ति मुसलमान न होगा। लेकिन अभी संधिपत्र तैयार ही हो रहा था कि सुहैल, जो मक्का वालों की ओर से समझौते के लिए आया था, उसका बेटा अबू जंदल वहाँ पहुँच गया। वह मुसलमान हो गया था और क़ुरैश ने उसे क़ैद कर रखा था। अब अवसर पाकर भाग आया था। उसके पाँव में लोहे की ज़ंजीर थी।

यह देख सुहैल ने कहाः "समझौते के अनुसार इसे वापस कर दो।"

मुसलमानों ने कहाः "अभी समझौते पर हस्ताक्षर नहीं हुए हैं, अतः उसकी शर्तों पर अमल नहीं हो सकता।"

सुहैल ने बिगड़कर कहाः "तब हम सुलह ही नहीं करते।"

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अबू जंदल को क़ुरैश के हवाले कर दिया और उन्होंने उनको फिर से क़ैद में डाल दिया। अबू जंदल ने जेल ही में इसलाम सिखलाना शुरू कर दिया और इस तरह मक्का के अंदर एक साल ही में तीन सौ आदमी मुसलमान हो गए। प्रत्येक व्यक्ति, जिसे थोड़ी बहुत समझ है, इस बात से जान सकता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सच्चाई और इसलाम की सत्यता किस तरह दिलों को अपना बना रही थी कि सगे-संबंधियों की जुदाई, वतन से दूरी, यातनाओं का डर तथा क़ैद का भय भी लोगों को मुसलमान होने से रोक नहीं पा रहा था।

राजाओं को इसलाम का निमंत्रण

सन 6 हिजरी

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उस समय के नामवर तथा प्रसिद्ध राजाओं के पास दूत भेजे और उनको इसलाम ग्रहण करने का निमंत्रण दिया, जिसकी विस्तृत जानकारी निम्नवत हैः

1. हबशा का राजा असहमा नजाशी था। वह आपका पत्र मिलने के बाद मुसलमान हो गया।
2. बहरीन का राजा मुनज़िर था। मुसलमान हो गया। उसके राज्य के बहुत-से लोग भी मुसलमान हो गए।
3. ओमान का राजा जीफ़र था। वह अपने भाई के साथ मुसलमान हो गया।
4. ईरान का राजा ख़ुसरौ था। उसने आपके पत्र को फाड़ दिया तथा यमन के शासक को लिखा कि आपको बंदी बनाकर भेज दे। यमन के शासक का नाम बाज़ान था। उसने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ठीक-ठीक हालात मालूम किए और मुसलमान हो गया। यमन का पूरा क्षेत्र भी मुसलमान हो गया।

5. इसकंदरिया का राजा मुक़ौक़िस था। मुसलमान नहीं हुआ। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिए बहुत-से बहुमूल्य उपहार भेजे।
6. शाम का बादशाह हारिस था। मुसलमान नहीं हुआ।
7. यमामा का शासक हौज़ा था। इसलाम ग्रहण नहीं किया।
8. रूमी साम्राज्य का सम्राट हिरक़्ल (Heraclius) था। उसने पहले तो आपके हालात मालूम किए, फिर अपने दरबारियों से कहा कि मुसलमान हो जाना चाहिए। लेकिन, जब देखा कि सरदार लोग नहीं मानते और सारे दरबार पर क्रोध की छाया पड़ने लगी है, तो डर गया कि कहीं सिंहासन से हाथ न धोना पड़े, इसलिए मुसलमान न हुआ।

क़ैसर ने आपके सही हालात जानने के लिए आदेश दिया था कि मक्के का जो व्यक्ति शाम में मिले, उसे दरबार में उपस्थित किया जाए। तलाश करने पर अबू सुफ़यान मिला। उसके साथ कुछ और लोग भी थे। अबू सुफ़यान अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ कई लड़ाइयाँ लड़ चुका था और उन दिनों वह आपका सख़्त दुश्मन हुआ करता था।

अबू सुफ़यान का कहना है कि हिरक़्ल के लोग उसे ईलिया नगर ले गए। दरबार सरदारों से भरा हुआ था और हिरक़्ल ताज पहने बैठा था। हरिक़्ल ने अपने अनुवादक के माध्यम से कहाः “तुम्हारे अंदर उस व्यक्ति का, जो स्वयं को नबी समझता है, निकटतम संबंधी कौन है?”

अबू सुफ़यान ने कहाः “मैं ही उसका निकटतम संबंधी हूँ।”

क़ैसरः तुम्हारे बीच क्या संबंध है?

अबू सुफ़यानः वह मेरा चचेरा भाई है। मैंने ऐसा इसलिए कहा कि यात्रियों के उस समूह में मेरे सिवा कोई अब्द-ए-मनाफ़ की नस्ल से न था।

क़ैसरः उसे आगे बुलाओ और उसके साथियों को उसके पीछे खड़ा कर दो। मैं उससे कुछ बातें पूछूँगा। उसके साथियों को समझा दो कि अगर वह झूठ बोले, तो वे बतला दें।

अबू सुफ़यान कहता है कि मुझे इस बात से शर्म आई कि कहीं मेरे साथी मुझे झुठला न दें। वरना मैं बहुत-सी इधर-उधर की बातें बनाता।

क़ैसरः उसका ख़ानदान कैसा है?

अबू सुफ़यानः वह ऊँचे ख़ानदान का है।

क़ैसरः क्या किसी और ने भी पहले ऐसा दावा किया है?

अबू सुफ़यानः नहीं!

क़ैसरः उस व्यक्ति पर कभी झूठ बोलने का आरोप लगा है?

अबू सुफ़यानः नहीं!

क़ैसरः उसके पूर्वजों में कोई राजा हुआ है?

अबू सुफ़यानः नहीं!

क़ैसरः तुम्हारे संपन्न तथा सरदार लोग उसका धर्म मान रहे हैं या निर्धन लोग?

अबू सुफ़यानः निर्धन लोग।

क़ैसरः उसके मानने वाले बढ़ रहे हैं या घट रहे हैं?

अबू सुफ़यानः बढ़ रहे हैं।

क़ैसरः कोई व्यक्ति विमुख होकर उसके धर्म को छोड़ता भी है?

अबू सुफ़यानः नहीं!

क़ैसरः वह वचन भी तोड़ता है?

अबू सुफ़यानः नहीं! परन्तु, अब हमारे बीच एक समझौता हुआ है और डर है कि कहीं वह तोड़ न दे। (अबू सुफ़यान कहता है कि मैं इससे अधिक कोई ऐसी बात न कह सका, जिससे आपकी कमी निकलती और मेरे साथी मुझे न झुठलाते।)

क़ैसरः कभी तुम्हारा उससे युद्ध भी हुआ है?

अबू सुफ़यानः हाँ!

क़ैसरः फिर नतीजा क्या रहा?

अबू सुफ़यानः कभी वह जीता और कभी हम जीते।

क़ैसरः वह क्या सिखाता है?

अबू सुफ़यानः वह कहता है कि केवल एक अल्लाह की वंदना करो, किसी को उसका साझी न ठहराओ, पूर्वजों के ठहराए हुए पूज्यों की पूजा न करो,

नमाज़ पढ़ो, ज़कात दो, सदाचारी बनो, वचन का पालन करो और अमानतें अदा करो।

इतना पता करने के बाद क़ैसर ने अपने अनुवादक से कहाः

"उसे बतला दोः तू कहता है कि वह ऊँचे खानदान से संबंध रखता है। तो सुन ले कि नबी ऐसे ही ऊँचे खानदानों से संबंध रखते हैं।

तू कहता है कि उससे पहले उसके ख़ानदान के किसी ने इस तरह का दावा नहीं किया है। तो जान ले कि अगर उस परिवार के किसी व्यक्ति ने ऐसा दावा किया होता, तो मैं समझता कि वह उसी की नक़ल कर रहा है।

तू कहता है कि नबी होने का दावा करने से पहले किसी ने उसपर झूठा होने का आरोप नहीं लगाया था। तो ऐसे में यह कैसै हो सकता है कि जिस व्यक्ति ने किसी इनसान के संबंध में झूठ नहीं बोला, वह अल्लाह के संबंध में झूठ बोले?

तू कहता है कि उसके बाप-दादा में से कोई बादशाह नहीं था। अगर ऐसा होता, तो मैं समझता कि वह इस बहाने अपने बाप-दादा का राज्य प्राप्त करना चाहता है।

तू कहता है कि उसका धर्म निर्धन एवं असहाय लोग ग्रहण कर रहे हैं। तो जान ले कि नबियों के निमंत्रण को ऐसे ही लोग पहले ग्रहण करते हैं।

तू कहता है कि मुसलमान बढ़ रहे हैं। तो याद रख कि ईमान ऐसे ही बढ़ता हुआ पूर्णता प्राप्त कर लेता है।

तू कहता है कि उसके धर्म से कोई विमुख नहीं होता। दरअसल ईमान होता ही ऐसा है कि जब दिल के अंदर प्रवेश कर जाता है, तो निकलता नहीं है।

तू कहता है कि वह कभी वचन देकर पीछे नहीं हटता, तो दरअसल नबी होते ही ऐसे हैं।

तू कहता है कि हमारे बीच युद्ध हुआ है तथा एक बार वह जीता और एक बार हम। तो जान ले कि नबियों की भी परीक्षा होती है, परन्तु अंततः जीत उन्हीं की होती है।

तू कहता है कि वह एक अल्लाह की वंदना करने और साझी न ठहराने को कहता है। वह बाप-दादा के ठहराए हुए असत्य पूज्यों से रोकता है। नमाज़, सच्चाई, सदाचार, वचन का पालन करने और अमानत अदा करने का अदेश देता है। तो याद रख कि नबियों का यही मिशन हुआ करता है।"

क़ैसर ने फिर कहाः "मैं जानता था का एक नबी प्रकट होने वाला है। परन्तु इस बात का अंदाज़ा न था कि वह अरब देश में प्रकट होगा। यदि तेरे उत्तर सही हैं, तो वह एक दिन इस स्थान का भी मालिक बन जाएगा, जहाँ आज में बैठा हूँ। काश, मैं उसके पास जा पाता! काश, मैं उसके चरण धोने का सौभाग्य प्राप्त कर पाता!"

सन 6 हिजरी के बाद और भी बहुत-से नामवर और प्रसिद्ध सरदार मुसलमान हुए थे। उन लोगों ने पहले इसलाम के बारे में सुना। फिर ख़ुद

भी छानबीन की और जब सच्चाई का पता लग गया, तो मुसलमान हो गए। उनमें से कुछ विख्यात लोगों के नाम इस प्रकार हैं-

1. नज्द का सरदार सुमामा। सन 7 हिजरी में मुसलमान हुआ।
2. ग़स्सान का राजा जबला। इसने भी सन 7 हिजरी में इसलाम ग्रहण किया।
3. क़ैसर की ओर से नियुक्त शाम प्रांत का शासक फ़रवा बिन अम्र जुज़ामी। इसने सन 7 हिजरी में इसलाम को गले लगाया। जब क़ैसर को इसके मुसलमान होने की सूचना मिली, तो उसे बुलाकर इसलाम को त्याग देने का आदेश दिया। उसने नहीं माना, तो क़ैसर ने उसे क़ैद कर लिया। इसपर भी वह अडिग रहा, तो फाँसी पर चढ़ा दिया। वह फाँसी पर चढ़ते हुए भी इस बात का शुक्र अदा करता रहा कि इसलाम के साथ मौत को गले लगाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।
4. ख़ालिद बिन वलीद, उसमान बिन तलहा, और अम्र बिन आस (रज़ियल्लाहु अंहुम) मक्का के मशहूर सरदार थे। ख़ुद मदीना पहुँचे और सन 8 हिजरी में मुसलमान हुए।
5. कुख्यात इसलाम दुश्मन अबू जह्ल का बेटा इकरिमा बड़ा बहादुर और नामी सरदार था। सन 8 हिजरी में मुसलमान हुआ।
6. अदी अपने इलाक़े का सरदार तथा प्रसिद्ध दानवीर हातिम ताई का बेटा था। बड़ा बहादुर भी था। सन 9 हिजरी में मुसलमान हुआ।
7. उकैदिर दूमतल जंदल का शासक था। सन 9 हिजरी में मुसलमान हुआ।

8. ज़िलकुला ताइफ़, यमन के कुछ भागों और हिमयर क़बीलों का शसक था। ईश्वर कहलाता और सजदे कराया करता। जब मुसलमान हुआ, तो राज्य छोड़कर निर्धनता का जीवन बिताने लगा। सन 9 हिजरी में मुसलमान हुआ था।

क़बीलों का मुसलमान होना

राजाओं और शासकों के अतिरिक्त अरब के ऐसे बड़े-बड़े क़बीले, जो पूरे शौक़ और अभिरुचि के साथ मुसलमान हुए और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दर्शन के लिए दूर-दूर से मदीना आए, उनकी संख्या भी कुछ कम नहीं है। उनकी विस्तारित जानकारी मेरी किताब 'रहमतुल लिल-आलमीन' से प्राप्त करनी चाहिए।

सन 8 हिजरी अथवा 20 नबूवत

मक्का, जहाँ से काफ़िरों ने प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को निकाला था, जहाँ किसी निर्धन मुसलमान का जीवित रहना मुश्किल था और जहाँ किसी के लिए इसलाम की बात करना भी आसान न था, इस साल वह भी मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गया। काबा, जहाँ तीन सौ साठ बुत रखे थे, बुतों से पाक हो गया और जिस कार्य के लिए यह मस्जिद चार हज़ार साल पहले बनी थी, यानी एक अल्लाह की वंदना, उसके अंदर वह काम होने लगा।

सन 9 हिजरी अथवा 21 नबूवत

1. इस साल हज फ़र्ज़ हुआ। प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अंहु) को हाजियों के क़ाफ़िले का अमीर बनाया और कई सौ मुसलमानों ने हज अदा किया।

2. अली मुर्तज़ा (रज़ियल्लाहु अंहु) ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आदेश से हज के मैदान में ऐलान किया कि आज के बाद कोई बहुदेववादी अल्लाह के घर काबा के अंदर प्रवेश नहीं करेगा। कोई स्त्री अथवा पुरुष नग्न अवस्था में काबा का तवाफ़ न कर सकेगा। जिन लोगों ने वचन तोड़ा है, उनके साथ कोई संधि बाक़ी नहीं रहेगी।

आपके द्वारा लड़े गए युद्ध

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब मदीना आ बसे थे, तब दुश्मनों ने सेनाएँ एकत्र की थीं और कई बार मुसलमानों पर चढ़-चढ़कर गए थे। चार वर्षों तक मुसलमानों ने धैर्य रखा। फिर उन्होंने भी कई बार आगे बढ़कर दुश्मन की आक्रमणकारी सेनाओं को तितर-बितर किया। यह झगड़े सन 2 हिजरी से शुरू हुए और सन 9 हिजरी तक सात साल चलते रहे। आपके द्वारा लड़े गए प्रसिद्ध युद्ध यह हैं-

1. बद्र युद्ध, सन 2 हिजरी।
2. उहुद युद्ध, सन 3 हिजरी।
3. ख़ंदक़ युद्ध, सन 4 हिजरी।
4. ख़ैबर युद्ध, सन 5 हिजरी।
5. मक्का विजय युद्ध, सन 8 हिजरी।
6. हुनैन युद्ध, सन 8 हिजरी।
7. तबूक युद्ध, सन 9 हिजरी।

सन 10 हिजरी अथवा 22 नबूवत

इस वर्ष नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हज किया। एक लाख चवालीस हज़ार मुसलमान साथ थे। प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम) ने इस अवसर पर इसलाम के सिद्धांत समझाए, जाहिलियत काल के रीति-रिवाजों का खंडन किया और उम्मत को अल-विदा कहा।

सन 11 हिजरी

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), 23 वर्ष पाँच दिन तक बंदों को अल्लाह के आदेश पहुँचाकर और अल्लाह का सच्चा एवं सीधा मार्ग दिखाकर, 63 वर्ष पाँच दिन की आयु में, रबीउल अव्वल महीने की 12 तारीख़ को, सोमावार के दिन दुनिया से विदा हो गए।

"إنا لله و إنا إليه راجعون"

ख़ुतबा

मृत्यु से एक महीना पहले प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सबको बुलाकर फ़रमायाः

“मुसलमानो, अल्लाह तुमको सलामती से रखे, तुम्हारी रक्षा करे, तुम्हें बचाए, तुम्हारी मदद करे, तुमको ऊँचा करे, सत्य का मार्ग दिखाए और उसपर चलने का सामर्थ्य प्रदान करे, अपनी शरण में रखे, आपदाओं से बचाए और तुम्हारे धर्म को तुम्हारे लिए सुरक्षित बनाए। मैं तुमको सदाचार तथा अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूँ, तुमको अल्लाह के हवाले करता हूँ तथा तुमको अल्लाह की यातना से डराता हूँ। आशा है कि तुम भी लोगों को इससे डराओगे। तुमको चाहिए कि अल्लाह के बंदों और बस्तियों में सरकशी, अभिमान और अकड़कर चलने की रीति आम न होने दो। आख़िरत का घर उन्हीं लोगों के लिए है, जो दुनिया में अकड़कर नहीं चलते और बिगाड़ पैदा नहीं करते। अच्छा अंत केवल सदाचारियों के लिए है।”

आगे फ़रमायाः

“जो बड़े-बड़े राज्य तुमको प्राप्त होंगे, मैं उनको देख रहा हूँ। मुझे इस बात का डर नहीं है कि तुम बहुदेववादी बन जाओगे, लेकिन इस बात का डर

ज़रूर है कि कहीं दुनिया की असीम चाहत और फ़ितने में पड़कर तुम हलाक न हो जाओ, जैसे पहली उम्मतें हलाक हो गईं।"

मृत्यु से कुछ दिन पहले फिर सब मुसलमानों को बुलाया तथा अंसार और मुहाजिरों के संबंध में मार्गदर्शन तथा दिशा-निर्देश दिए। फिर फ़रमायाः

"अगर किसी व्यक्ति का अधिकार मुझपर हो, तो बता दे।" एक व्यक्ति ने कहा कि आपने एक निर्धन व्यक्ति को मुझसे तीन दिरहम दिलाए थे, वह नहीं मिले। यह सुनते ही आपने वह दिरहम अदा कर दिए। फिर बहुत-से लोगों के लिए दुआएँ कीं। बीमारी के दिनों में फ़रमायाः "लोगो, दास-दासियों के संबंध में अल्लाह को याद रखो। उनको ख़ूब पहनाओ, ख़ूब खिलाओ और उनके साथ सदा नरमी से बात करो।"

मृत्यु के समय फ़रमायाः "नमाज़ की पाबंदी करना, नमाज़ की पाबंदी करना तथा दासों के अधिकारों की रक्षा करना।" अंतिम शब्द, जो आकाश की ओर आँख उठाकर फ़रमाए, यह थेः

"अल्लाह, सबसे ऊँचा मित्र!"

अध्यायः 2

आपका परिवार

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नौ चचा थे। उनमें से हमज़ा (जिनका लक़ब 'अल्लाह और उसके रसूल का शेर' तथा 'शहीदों का सरदर' है) और अब्बास (रज़ियल्लाहु अंहुमा) मुसलमान हुए। अबू तालिब (अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु अंहु के पिता) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर जान छिड़कने वाले और आपके सहायक थे। छह फूफियाँ थीं, जिनमें सफ़ीया (ज़ुबैर बिन अव्वाम की माता) (रज़ियल्लाहु अंहुमा) मुसलमान हुईं। बारह दास थे और सब को दासता से मुक्त कर दिया था। तीन दासियाँ थीं। उनमें से एक उम्मे ऐमन थीं, जिन्होंने प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को गोद खिलाया था। आप उनका बड़ा सम्मान करते थे। तीन बेटे थे; क़ासिम (जिनके नाम पर आपकी कुन्नियत अबुल क़ासिम है), अब्दुल्लाह (जिनका लक़ब तय्यिब और ताहिर है) और इबराहीम। सब बचपन ही में दुनिया छोड़ चले थे। चार बेटियाँ थीः

1. ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अंहा), जिनका विवाह अबुल आस बिन रबी से हुआ था।
2. रुक़य्या (रज़ियल्लाहु अंहा)।

3. उम्मे कुलसूम (रज़ियल्लाहु अंहा)। दोनों की शादी उसमान बिन अफ़्फ़ान (रज़ियल्लाहु अंहु) से हुई थी। (उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अंहा का विवाह रुक़य्या रज़ियल्लाहु अंहा की मृत्यु के पश्चात हुआ था। चूँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो बेटियाँ उसमान रज़ियल्लाहु अंहु के निकाह में आई थीं, इसलिए उनको ज़ुन-नूरैन कहा जाता है।)
4. फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अंहा)। उनके पति अली मुर्तज़ा (रज़ियल्लाहु अंहु) थे। ('बतूल' और 'ज़हरा' उनके अन्य नाम तथा 'स्त्रियों का सरदार' ख़िताब था। उनको अपनी बहनों के मुक़ाबले में यह विशेषता प्राप्त है कि उनकी नस्ल ही दुनिया में बाक़ी रही।) हसन और हुसैन (रज़ियल्लाहु अंहुमा) उन्हीं के गर्भ से थे। (हुसैन रज़ियल्लाहु अंहु 15 शाबान या 5 रमज़ान को पैदा हुए।)

पत्नियाँ

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की प्रत्येक पत्नी का लक़ब अल्लाह के आदेश से 'उम्मुल मोमिनीन' है। यहाँ हर एक का संक्षिप्त हाल लिखा जाता हैः

1. **उम्मुल मोमिनीन ख़दीजा रज़ियल्लाहू अंहाः** आप नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की प्रथम पत्नी हैं। नबी (सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम) की दीनदारी, कौशल और बरकत को देखकर उन्होंने ख़ुद आपसे शादी की दरख़्वास्त की थी। इबराहीम के सिवा आपकी कुल औलाद उन्हीं से है। उनकी सच्चाई और सहानुभूति को आप उनकी मृत्यु के बाद भी हमेशा याद करते रहे। (सन 10 नबूवत में उनकी मृत्यु हुई।)

2. उम्मुल मोमिनीन सौदा रज़ियल्लाहु अंहाः यह अपने पहले पति सकरान के साथ मुसलमान हुई थीं। उनकी माँ भी मुसलमान हो गई थी। फिर तीनों हिजरत करके हबशा चले गए थे। वहाँ उनका पति मर गया। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने 10 नबूवत में (ख़दीजा रज़ियल्लाहु अंहा की मृत्यु के पश्चात) उनसे निकाह कर लिया। (सन 54 हिजरी को दुनिया से विदा हुईं।)

3. उम्मुल मोमिनीन आइशा रज़ियल्लाहु अंहाः अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अंहु) की बेटी हैं। अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अंहु) ने दिलोजान और धन-दौलत से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा इसलाम की ऐसी सेवा की कि आप फ़रमाया करते थेः "मैं सबकी क़ुरबानियों का बदला दे चुका हूँ, परन्तु अबू बक्र की क़ुरबानियों का बदला अल्लाह ही देगा।" अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अंहु) ने अपनी बेटी को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के निकाह में देने की इच्छा व्यक्त की और कहाः "मेरे जीवनभर की तीन इच्छाएँ हैं, जिनमें से एक यह है कि मेरी बेटी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के घर में हो।" नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने परम मित्र की इस

इच्छा को अल्लाह के कहने पर स्वीकृति दे दी। आइशा (रज़ियल्लाहु अंहा) 2 हिजरी को आपके घर आईं। जैसे पिता ने इसलाम की बड़ी-बड़ी सेवाएँ की थीं, बेटी भी वैसी ही ज्ञानी तथा गुणी निकलीं। बड़े-बड़े सहाबा ज्ञान-विज्ञान की कठिन बातें उनसे पूछा करते थे। दो हज़ार दो सौ दस हदीसें उनसे वर्णित हैं। (सन 57 हिजरी में वफ़ात पाईं।)

4. उम्मुल मोमिनीन हफ़सा रज़ियल्लाहु अंहाः उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अंहु) की बेटी थीं। अपने पहले पति के साथ हबशा की ओर हिजरत की थीं और फिर मदीने की ओर हिजरत कीं। उनका पति उहुद युद्ध में ज़ख़्मी हुआ और उन्हीं ज़ख़्मों से प्राण त्याग दिया। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उनसे 3 हिजरी में शादी कर ली। अल्लाह की यह बंदी हद दर्जा इबादतगुज़ार थी। (45 हीजरी में दुनिया छोड़ीं।)

5. उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब बिंत ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अंहाः इनका पहला निकाह तुफ़ैल बिन हारिस से हुआ था। फिर उबैदा बिन हारिस के निकाह में गई थीं। यह दोनों नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सगे चचेरे भाई थे। तीसरा निकाह अब्दुल्लाह बिन जहश से हुआ था। यह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के फूफीज़ाद थे। उहुद युद्ध में शहीद हुए। इसके बाद 3 हिजरी में आपने ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अंहा) से निकाह कर लिया। वह निकाह के बाद केवल तीन महीने जीवित रहीं। ग़रीबों की इतनी मदद और सहायता करती

थीं कि उनका लक़ब 'उम्मुल मसाकीन' पड़ गया। (4 हिजरी में दुनिया को अलविदा कहा।)

6. उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अंहाः उनका पहला निकाह अबू सलमा अब्दुल्लाह बिन अब्दुल असद से हुआ था, जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की फूफी के बेटे और दूध भाई थे। उन्होंने अपने पति के साथ हबशा की हिजरत की थी और फिर मदीने की हिजरत भी की थी। मक्के से मदीने तक तनहा यात्रा की थी। अबू सलमा की मृत्यु उहुद युद्ध के ज़ख़्मों से हुई थी। चार बच्चे यतीम छोड़े। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने असहाय बच्चों और उनकी हालत पर तरस खाकर उनसे 3 हिजरी में विवाह कर लिया। (सभी उम्महातुल मोमिनीन के बाद 59 हिजरी में मृत्यु हुई।)

7. उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब बिंत जहश रज़ियल्लाहु अंहाः यह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सगी फूफी की बेटी हैं। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उनका निकाह कोशिश करके अपने मुक्त किए हुए दास ज़ैद (रज़ियल्लाहु अंहु) के साथ करा दिया था। लेकिन, उनके पति की उनसे नहीं बनी और पत्नी को छोड़ दिया। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ज़ैद को बहुत समझाया था, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अंहा) की इस मुसीबत और अपमान का बदला अल्लाह ने यह दिया कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ उनका निकाह सन 5 हिजरी में करवा दिया। आपत्ति जताने वाले कहते हैं कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक

दिन यकायक ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अंहा) को देख लिया था। इसलिए मुँह बोले बेटे से छुड़ाकर ख़ुद शादी कर ली। दरअसल यह लोग तीन बातें भूल जाते हैं-

1. ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अंहा) आपकी सगी फूफी की बेटी थीं। आँखों के सामने पली-बढ़ीं। उनकी शक्ल-सूरत की बात आपसे कुछ भी छिपी न थी।
2. उनका पहला निकाह ज़ैद (रज़ियल्लाहु अंहु) के साथ ख़ुद नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बड़ी कोशिश से कराया था।
3. इसलाम मुँह बोला बेटा बनाने की प्रथा का खंडन करता है।

8. उम्मुल मोमिनीन जुवैरिया रज़ियल्लाहु अंहाः लड़ाई में पकड़ी गई थीं और साबित बिन क़ैस (रज़ियल्लाहु अंहु) के हिस्से में आई थीं। वह बीस साल के जवान थे। मगर उन्होंने कुछ रुपयों के बदले में जुवैरिया (रज़ियल्लाहु अंहा) को अज़ाद करने का वचन दे दिया था। वह चंदा माँगने के लिए आपके पास आईं और बताया कि मैं मुसलमान हो चुकी हूँ, तो आपने उनका सारा रुपया अदा कर दिया। वह आज़ाद हो गईं तो फ़रमायाः "बेहतर यह होगा कि मैं तुम्हारे साथ निकाह कर लूँ।" (यह इस ख़याल से फ़रमाया कि अगर और क़ैदी आए और उन्होंने भी चंदा माँगा, तो क्या किया जाए?) जब मुस्लिम सेना ने सुना कि सारे क़ैदी अब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के रिश्तेदार बन गए हैं, तो उन्होंने सब क़ैदियों को छोड़ दिया। इस छोटे से उपाय से आपने एक सौ से अधिक इनसानों को दास-दासी बनाए

जाने से बचा लिया। यह निकाह 5 हिजरी में हुआ। 56 हिजरी में उनका देहांत हुआ।

9. उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अंहाः अबू सुफ़यान उमवी की बेटी हैं। जिन दिनों उनका बाप नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ लड़ाई कर रहा था, उन्हीं दिनों मुसलमान हुई थीं। इसलाम के लिए बड़ी-बड़ी तकलीफ़ें झेलीं। फिर अपने पति को लेकर हबशा की हिजरत की। वहाँ जाकर उनके पति ने इसलाम त्याग दिया। ऐसी सच्ची और पक्के ईमान वाली स्त्री के लिए यह कितनी बड़ी मुसीबत थी कि इसलाम के कारण बाप, भाई, परिवार और अपना देश छोड़ दिया, परदेश में पति का सहारा था, परन्तु उसके इसलाम त्याग देने से वह भी जाता रहा। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ऐसी धैर्यवान स्त्री के साथ सन 5 हिजरी में स्वयं विवाह कर लिया। निकाह हबशा ही में पढ़ाया गया, ताकि उम्मे हबीबा (रज़ियल्लाहु अंहा) की मुसीबतों का जल्द ख़ात्मा हो जाए। (इनकी मृत्यु 44 हिजरी में हुई।)

10. उम्मुल मोमिनीन मैमूना रज़ियल्लाहु अंहाः उनके दो निकाह पहले हो चुके थे। उनकी एक बहन हमज़ा (रज़ियल्लाहु अंहु) के, एक बहन अब्बास (रज़ियल्लाहु अंहु) के और एक बहन जाफ़र तय्यार (रज़ियल्लाहु अंहु) के घर में थी। एक बहन ख़ालिद बिन वलीद (रज़ियल्लाहु अंहु) की माँ थी। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के चचा अब्बास (रज़ियल्लाहु अंहु) ने आपसे उनके बारे में कहा और

आपने चचा के कहने पर उनसे सन 7 हिजरी में निकाह कर लिया। (51 हिजरी में दुनिया से चल बसीं।)

यह सब निकाह उस आयत से पहले हो चुके थे, जिसमें एक मुसलमान को (न्याय की शर्त के साथ) अधिक से अधिक चार पत्नियाँ रखने की अनुमति दी गई है।

11. उम्मुल मोमिनीन सफ़ीया रज़ियल्लाहु अंहाः आप बनू नज़ीर के सरदार हुयय बिन अख़तब की बेटी थीं। आपकी माँ का नाम ज़र्रा था। आपका असल नाम ज़ैनब था। पहली शादी सल्लाम बिन मिशकम से हुई थी, जिसने आपको तलाक़ दे दी। दूसरा निकाह किनाना से हुआ। ख़ैबर युद्ध में बंदी बनकर प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के हिस्से में दासी की हैसियत से आईं, आपने आज़ाद फ़रमाकर उनसे निकाह कर लिया और सफ़ीया नाम रखा। (50 हिजरी में देहांत हुआ।)

अध्यायः 3

आपका आचरण

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः "अल्लाह ने मुझे इसलिए नबी बनाया है, ताकि मैं स्वच्छ आचरण एवं सुकर्मों को संपूर्ण रूप प्रदान करूँ।" आइशा (रज़ियल्लाहु अंहा) से किसी से आपके आचरण के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहाः "आपका आचरण क़ुरआन था।" मतलब यह है कि पेड़ फल से और इनसान अपनी शिक्षा से पहचाना जाता है। तुम क़ुरआन मजीद से नबी की पहचान कर लो। क़ुरआन मजीद ने आपको सारी कायनात के हक़ में रहमत कहा है और समय का सच्चा इतिहास बताता है कि आपका अस्तित्व पूर्णतः रहमत था। एक हदीस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आचरण को कुछ यूँ दर्शाया गया हैः

"आप तमाम सृष्टियों के हक़ में गवाह हैं। आप आदेश का पालन करने वालों को सुसमाचार देते और अवमानना करने वालों को डराते हैं। आप अनजान लोगों के लिए शरणस्थल हैं, अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं तथा सब काम अल्लाह पर छोड़ देते हैं। न स्वभाव के कठोर हैं, न बोलचाल के सख़्त। कभी चीख़कर नहीं बोलते। बुराई का बदला बुराई से नहीं देते। आपका काम क़ौम और धर्म की कमियों को दूर करना और एक अल्लाह के एकत्व को सिद्ध करना है। आपकी शिक्षा अंधों को आँखें और बहरों को कान देती है

तथा निश्चेत दिलों से परदा उठाती है। आप हर गुण से सुसज्जित और कुशल व्यवहार के मालिक हैं। शांति आपका परिधान और सदाचार आपका वस्त्र है। आपका अंतरात्मा पारसाई है। आपकी वाणी हिकमत है। सत्य और निष्ठा आपकी तबीयत है। क्षमा और उपकार आपकी आदत है। न्याय आपका स्वभाव है। सच्चाई आपकी शरीयत है और हिदायत आपका मार्गदर्शक। इसलाम आपका धर्म है और अहमद आपका नाम।

आप भटकाव के बाद राह दिखाने वाले और अज्ञानता के बाद ज्ञान सिखाने वाले हैं। गुमनाम लोगों को ऊँचाई प्रदान करने वाले, बेनाम लोगों को नामवर करने वाले, कम को अधिक और दरिद्रों को धनवान करने वाले हैं। अल्लाह ने आपके द्वारा शत्रुता के स्थान पर एकता प्रदान की। फटे हुए दिलों को प्रेमभाव प्रदान किया। अलग-अलग आकांक्षाओं और भिन्न-भिन्न जातियों को एक लड़ी में पिरोया। आपकी उम्मत सबसे अच्छी उम्मत है। आपका काम लोगों को सत्य का मार्ग दिखाना है।"

धैर्य तथा सहनशीलता

1. ताइफ़ वालों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पत्थर मार-मारकर घायल तथा बेहोश कर दिया था। ऐसे में, फ़रिश्ते ने आकर कहा कि आदेश मिले तो इस बस्ती को उलट दूँ! आपने फ़रमायाः "नहीं, नहीं! अगर ये लोग मुसलमान नहीं होते, तो उम्मीद है कि इनकी आने वाली नस्लें मुसलमान हो जाएँगी।"

2. आपको एक यहूदी का क़र्ज़ देना था। अभी वादे के दिन बाक़ी थे। उसने राह चलते आकर आपका गरीबान पकड़ लिया और कहा कि मेरा क़र्ज़ अदा कर दो। उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहू अंहु) ने कहाः "यह गुस्ताख़ क़त्ल होना चाहिए!" लेकिन प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः "नहीं, तुम मुझे अच्छे अंदाज़ में क़र्ज़ चुकाने को कहो और उसे तक़ाज़े का अच्छा तरीक़ा बतलाओ।" फिर उससे हँसकर फ़रमायाः "अभी तो वादे के दिन बाक़ी हैं।"
3. एक गँवार ने पीछे से आकर ज़ोर से आपकी चादर खींची, जिससे गरदन में लाल निशान पड़ गए। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने पलटकर देखा, तो उसने कहाः "मेरी मदद करो, मैं निर्धन हूँ।" फ़रमायाः "उसे एक ऊँट खजूर और एक ऊँट जौ दे दो।"

शिष्टाचार और सहजता

1. लोगों के बीच पाँव फैलाकर कभी न बैठते।
2. अपने सम्मान के लिए लोगों को खड़े होने से रोकते।
3. कोई आपका हाथ पकड़ लेता, तो उससे कभी न छुड़ाते।
4. कीसी की बात न काटते।
5. सवार होकर पैदल को साथ न लेते। या तो सवार कर लेते या वापस कर देते। अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अंहु) कहते हैं कि एक दिन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) खच्चर पर बिना गद्दे के सवार थे। इतने में मैं मिल गया, तो फ़रमायाः "सवार हो जाओ।" मैं आपको पकड़कर चढ़ने लगा। ख़ुद तो न चढ़ सका, मगर आपको गिरा दिया।

आपने सवार होकर दोबारा चढ़ने को कहा। मैं फिर चढ़ नहीं सका और आपको फिर गिरा दिया। तीसरी बार आपने सवार होकर फ़रमायाः "सवार हो जाओ!" मैंने कहाः "मुझसे तो चढ़ा नहीं जाता। भला आपको कहाँ तक गिराऊँगा!"

दानशीलता और उदारता

1. कभी किसी माँगने वाले को ख़ाली हाथ वापस न करते। ज़ुबान पर इनकार न लाते। यदि देने को कुछ न होता, तो माँगने वाले को सबब बता देते और ऐसे पेश आते, जैसे कोई क्षमा माँगता है।
2. एक व्यक्ति ने आकर कुछ माँगा, तो फ़रमायाः "मेरे पास तो है नहीं, तुम बाज़ार से मेरे नाम पर क़र्ज़ ले लो।" फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अंहु) ने कहाः "अल्लाह ने आपको इसका पाबंद नहीं किया है।" यह सुन आप चुप हो गए। इतने में एक व्यक्ति ने कहाः "अल्लाह की राह में देना ही अच्छा है।" इसपर आप ख़ुश हो गए।

शर्म व हया

अबू सईद ख़ुदरी (रज़ियल्लाहु अंहु) कहते हैं कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के अंदर परदानशीं लड़की से बढ़कर हया थी।

1. अपने काम के लिए ख़ुद कष्ट उठा लेते, लेकिन शर्म के कारण किसी को न कहते।

2. किसी को कोई काम करते देख लेते, जो पसंद न होता, तो उसका नाम लेकर कुछ न फ़रमाते, बल्कि आम तौर पर लोगों को उस काम से रोक दिया करते।

दया और प्रेम

1. नफ़ली इबादत छुपकर किया करते कि उम्मत पर इतनी इबादत करना मुश्किल न गुज़रे।
2. हर काम में आसान सूरत को पसंद फ़रमाते।
3. फ़रमायाः "मेरे सामने किसी की पीठ पीछे निंदा न करो। मैं नहीं चाहता कि किसी की ओर से मेरा दिल मैला हो।"
4. उपदेश देने का काम छोड़-छोड़कर किया करते, ताकि लोग उकता न जाएँ।
5. बहुत बार ऐसा होता कि सारी-सारी रात उम्मत के लिए दुआ किया करते और फूट-फूटकर रोते।

रिश्ते-नाते का ख़याल

1. फ़रमायाः "मेरे दोस्त तो ईमान वाले हैं, लेकिन सभी रिश्तों-नातों का ख़याल रखता हूँ।"
2. एक युद्ध में एक स्त्री बंदी बनकर आई। उसने कहा कि मैं आपकी दाई की बेटी हूँ। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी चादर उतारकर उसके लिए बिछा दी।

3. मक्का वालों ने आपको तथा आपके साथियों को सैकड़ों कष्ट देकर वतन से निकाला था। बीसयों सच्चे मुसलमानों को क़त्ल किया था कि क्यों यह लोग एक अल्लाह की वंदना करते हैं। जब मक्का फ़त्ह हो गया, तो आपने सबको बुलाकर कह दिया कि तुम्हारे सारे अपराध क्षमा किए जाते हैं।

न्याय तथा संतुलन

1. जब दो व्यक्तियों में कोई झगड़ा हो जाता, तो न्याय के सथा निर्णय देते। अगर किसी का आपके साथ कोई मामला होता, तो वहाँ दयाभाव से काम लेते।
2. मक्का में एक स्त्री का नाम फ़ातिमा था। उसने चोरी की। लोगों ने उसामा बिन ज़ैद से, जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बहुत प्यारे थे, सिफ़ारिश कराई, तो फ़रमायाः "क्या तुम अल्लाह की ओर से निर्धारित दंड के बारे में सिफ़ारिश करते हो? सुन लो, अगर मेरी बेटी फ़ातिमा भी ऐसा करती, तो मैं उसे भी दंड देता।"
3. संतुलन के बारे में आपका फ़रमान हैः "सबसे अच्छा काम वह है, जो सबसे संतुलित हो।" इसमें हर बात में संतुलन रखने का निर्देश दिया गया है।

सच्चाई और अमानतदारी

1. जानी दुश्मन भी आपकी सच्चाई और अमानतदारी का इक़रार करते थे।

2. बचपन ही से सारा देश आपको सच्चा और अमानतदार कहकर पुकारा करता था।
3. एक दिन अबू जह्ल ने कहाः "ऐ मुहम्मद, मैं तुझे झूठा नहीं समझता, लेकिन तेरे धर्म पर मेरा दिल नहीं जमता।"
4. जिस रात नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) घर से मदीने के लिए निकले थे, दुश्मनों ने उस रात आपके क़त्ल की पूरी तैयारी कर रखी थी। मगर आपने अपने प्यारे भाई अली मुर्तज़ा (रज़ियल्लाहु अंहु) को इसलिए मक्के में पीछे छोड़ा था कि लोगों की जो अमानतें आपके पास हैं, वह अदा कर दी जाएँ।

पाक दामनी

1. नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमायाः "मक्के में लोग कहानियाँ कहा करते थे। मुझे भी सुनने का शौक़ हुआ। उस समय आयु दस वर्ष से कम थी। मैं इसी इरादे से चला। रास्ते में विश्राम के लिए तनिक बैठ गया। वहीं नींद आ गई। जब सूरज निकला, तब जाकर आँख खुली।"
2. उसी आयु का ज़िक्र है। आप फ़रमाते हैं कि किसी के यहाँ शादी थी। स्त्रियाँ गा रही थीं। डफ़ बज रही थी। मैं सुनने के लिए चला। चलते-चलते मुझे ज़ोर की नींद आई और मैं सो गया एवं दिन चढ़े उठा। इन दोनों बातों के सिवा कभी मैंने किसी नापसंदीदा काम का इरादा भी नहीं किया।

दुनिया के मोह से मुक्त व्यक्तित्व

1. नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की दुआ थीः ऐ अल्लाह, एक दिन भूखा रहूँ और एक दिन खाने को मिले। भूख में तेरे सामने गिड़गिड़ाया करूँ और खाकर तेरा शुक्र करूँ।
2. आइशा सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अंहा) कहती हैं कि आपका परिवार महीने दो महीने तक खजूर तथा पानी पर गुज़ारा करता। चूल्हे में आग तक न जलाई जाती।
3. आईशा सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अंहा) कहती हैं कि मेरे घर में आपका बिस्तर खजूर के पत्तों से भरा हुआ था।
4. हफ़सा (रज़ियल्लाहु अंहा) कहती हैं कि मेरे घर में आपका बिस्तर केवल टाट का था। उसे दो तह करके बिछा दिया जाता। एक दिन हमने चार तह कर दिया, तो फ़रमायाः "बिस्तर नर्म हो गया है। आगे ऐसा न करना।"
5. इब्ने औफ़ कहते हैं कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जीवनभर में कभी जौ की रोटी भी पेट भरकर नहीं खाई।
6. प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जो अंतिम रात दुनिया में काटी, उस रात आइशा (रज़ियल्लाहु अंहा) ने चिराग के लिए तेल एक पड़ोसन से उधार लिया था।
7. मृत्यु के समय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की कवच एक यहूदी के पास थी, जो अनाज के बदले गिरवी थी।

8. नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिस तरह ख़ुद दुनिया के मोह से आज़ाद रहते, वैसे ही परिवार के लोगों को भी रहने को कहते। आपकी बेटी फ़ातिमा ज़हरा (रज़ियल्लाहु अंहा) ने अपने हाथ दिखाए, जो तन्नूर की आग से झुलसे हुए थे और चक्की पीसने से छाले पड़े हुए थे। उन्होंने आपसे एक दासी माँगी। लेकिन, आपने फ़रमायाः "अल्लाह को ख़ूब याद करो। दुनिया के कष्ट भला क्या हैं!!"
9. दुआ फ़रमाया करतेः "ऐ अल्लाह, मुहम्मद की संतान को केवल उतना दे, जिसे पेट में डाल लें।"
10. दुनिया की वस्तुओं को कम से कम प्रयोग में लाने की यह सब सूरतें स्वेच्छा से थीं। आपके साथ कोई लाचारी नहीं थी।

इबादत

1. नफ़ली इबादतों में इतनी देर खड़े रहते कि पाँव सूज जाते। सहाबा ने कहा कि अल्लाह के रसूल तो बख़्शे-बख़्शाए हुए हैं, फिर इतना कष्ट क्यों उठाते हैं? तो फ़रमायाः "क्या अब मैं उसका शुक्र न करूँ?"
2. सजदे में इतनी देर तक पड़े रहते कि देखने वालों को स्वर्गवास हो जाने का शक हो जाता।
3. प्रार्थना के समय सीना देग की तरह जोश मारता हुआ मालूम पड़ता।
4. रहमत की आयत पढ़कर दुआ माँगते और अज़ाब की आयत पढ़कर काँप उठते।
5. कई-कई दिन लगातार रोज़ा रखा करते। अलबत्ता, अन्य लोगों को ऐसे रोज़ों से मना करते।

आम व्यवहार

1. सबसे हँसकर मिलते।
2. अनाथों को पालते और विधवाओं की मदद करते।
3. ग़रीबों और असहाय लोगों से प्यार करते और उनके बीच जाकर बैठते।
4. धरती पर बैठ जाते और अपने लिए कोई अलग से व्यवस्था पसंद न करते।
5. दास-दासी भी बीमार हो जाते, तो ख़ुद जाकर उनका हाल जानते।
6. कोई मुसलमान मर जाता और उसपर क़र्ज़ होता, तो दफ़न से पहले बैतुलमाल से उसका क़र्ज़ अदा कर देते।
7. कोई मुसलमान मरता, तो उसके जनाज़े में शरीक होते।
8. मुनाफ़िक़ लोग सामने आकर गुस्ताख़ियाँ करते और दुश्मनों की मदद किया करते, मगर आप कभी उनसे बदला न लेते।
9. एक बार नजरान के ईसाई आ गए। आपने उनको अनुमति दे दी कि मस्जिद में अपने तरीक़े की नमाज़ पढ़ लें।
10. जंगल में सहाबा एक बकरी ज़बह करने लगे। एक बोलाः मैं ज़बह कर दूँगा। दूसरा बोलाः मैं मांस काट दूँगा। तीसरा बोलाः मैं पका लूँगा। आपने फ़रमायाः “मैं लकड़ी ले आऊँगा।” आपके साथियों ने कहा कि हम सब सेवा के लिए हाज़िर हैं। आप क्यों कष्ट करेंगे? तो फ़रमायाः “मैं भाइयों में निकम्मा नहीं रहना चाहता।”

क्षमा और दया

1. नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के प्यारे चचा हमज़ा (रज़ियल्लाहु अंहु) को वहशी नामी एक व्यक्ति ने शहीद कर दिया था, आपके नाक-कान आदि काटे और कलेजा निकाला था। फिर भी जब वह क्षमा का प्रार्थी हुआ, तो क्षमा कर दिया।
2. हब्बार बिन असवद नामी एक व्यक्ति ने आपकी बड़ी बेटी ज़ैनब को नेज़ा मारा। वह हौदा से गिर गईं और उनका गर्भ नष्ट हो गया और उसी ज़ख़्म से उनकी मृत्यु हो गई। इस व्यक्ति ने भी सामने आकर माफ़ी माँगी, तो माफ़ कर दिया।
3. एक बार प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एक पेड़ के नीचे सो गए। तलवार पेड़ की शाखा से लटका दी। इतने में एक शत्रु आया, तलवार उठा ली और आपको गुस्ताख़ी से जगाया तथा पूछाः अब तुमको कौन बचाएगा? आपने फ़रमायाः "अल्लाह!" इतना सुनते ही वह चक्कर खाकर गिर पड़ा। तलवार हाथ से छूट गई। आपने तलवार उठा ली और फ़रमायाः "अब तुझे कौन बचा सकता है?" वह परेशान हो गया। अब आपने फ़रमायाः "जा मैं बदला नहीं लिया करता।"
4. आपने फ़रमायाः "जाहिलियत काल की जिन बातों पर क़बीले लड़ा करते थे, मैं उन सब बातों को मिटाता हूँ और सबसे पहले अपने परिवार के ख़ून का दावा छोड़ता हूँ तथा जिन लोगों से मेरे चचा को क़र्ज़ वसूल करना है, उनका क़र्ज़ भी माफ़ करता हूँ।"

अध्यायः 4

आपकी शिक्षाएँ

आस्थाओं, इबादतों, आदतों, लेनदेन, मुक्ति प्रदान करने वाली और विनाशकारी वस्तुओं, ज्ञान-विज्ञान और उपकार एवं परोपकार के संबंध में आपकी शिक्षाएँ एक अनंत सागर की हैसियत रखती हैं। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की महानता और इसलाम की श्रेष्ठता की बुनियाद यही शिक्षाएँ हैं। मैं इस संक्षिप्त पुस्तक में इन पवित्र शिक्षाओं की एक झलक दिखलाना चाहता हूँ।

अपना सुधार

1. बुद्धिमान वह है, जो ख़ुद को छोटा समझता है और काम वह करता है, जो मरने के बाद काम आए। बुद्धिहीन वह है, जो इच्छाओं पर चलता है और अल्लाह से उम्मीदें बाँधता है।
2. पहलवान वह नहीं, जो लोगों को पछाड़ देता है। पहलवान वह है, जो अपने ऊपर नियंत्रण रखता है।
3. निस्पृहता वह ख़ज़ाना है, जो कभी ख़ाली नहीं होता।
4. ग़ैरज़रूरी चीज़ों को छोड़ देना उत्तम दीनदारी है।
5. परामर्श भी अमानत है। झूठी सलाह देना ख़यानत है।
6. बुराई का परित्याग भी सदक़ा है।

7. हया संपूर्णतः भलाई है। (शर्म व हया में नेकी ही नेकी है।)
8. स्वास्थ्य और खुशहाली ऐसी नेमतें हैं, जो हर व्यक्ति को प्राप्त नहीं होतीं।
9. गुज़ारे में संतुलन से काम लेना भी आधी रोज़ी है। (सोच-समझकर ख़र्च करना आधी कमाई के बराबर है।)
10. तदबीर जैसी कोई बुद्धिमत्ता नहीं।
11. जो वचन का पाबंद नहीं, वह दीनदार नहीं।
12. बुद्धि से बढ़कर कोई दौलत नहीं।
13. पुरुष की सुंदरता उसकी साफ़गोई है।
14. अज्ञानता से बढ़कर कोई निर्धनता नहीं।
15. जिसके अंदर अमानतदारी नहीं, उसके अंदर ईमान नहीं।
16. अच्छे आचरण के बराबर प्रेम की तोई तदबीर नहीं।
17. सहजता इनसान को ऊँचाई प्रदान करती है।
18. दान से धन में कमी नहीं आती।
19. अपने भाई पर कटाक्ष न करो। ऐसा न हो कि तुम भी उसी चीज़ के शिकार हो जाओ।
20. जिस तरह सिरका से मधु नष्ट हो जाता है, उसी तरह कुव्यवहार से सारे गुण जाते रहते हैं।

माता-पिता की बात मानना

1. अल्लाह की ख़ुशी पिता की ख़ुशी में है तथा अल्लाह का क्रोध पिता के क्रोध में है।

2. सबसे उत्तम अमल नमाज़ को समय पर पढ़ना है और उसके बाद माता-पिता की बात मानना।
3. सबसे बड़ा गुनाह शिर्क है, उसके बाद माता-पिता की बात न मानना, फिर झूठी गवाही देना और झूठ बोलना।

रिशतेदारों के साथ व्यवहार

'रिहम' (रिश्ता-नाता) 'रहमान' से निकला है। जो रिश्ते-नाते का लिहाज़ करता है, उसे अल्लाह मिलाता है और जो उसे छोड़ता है, उसे अल्लाह छोड़ता है।

लड़कियों का पालन-पोषण

1. अगर किसी की तीन या दो बेटियाँ या बहनें हों और अल्लाह से डरकर उनका अच्छा पालन-पोषण करे, तो वह जन्नती है। (चाहे एक ही क्यों न हो।)
2. लड़कियों का पालन-पोषण एक परीक्षा है, जो उसमें खरा निकला, वह जहन्नम से बच जाएगा।

अनाथों की परवरिश

किसी अनाथ की परवरिश करने वाला मेरे साथ जन्नत में यूँ रहेगा, जैसे हाथ की दो उँगलियाँ।

शासकों की बात मानना

1. शासनकर्ता धरती में अल्लाह का साया है।

2. अगर हबशी दास भी शासनकर्ता बन जाए, तो तुम्हारे लिए उसकी बात मानना आवश्यक है।
3. हुकूमत कुफ़्र से नहीं, अत्याचार से जाती है।

दयाभाव

जो दया नहीं करता, उसपर दया नहीं की जाती।

भीख माँगने की बुराई

1. जो लोगों से भीख माँगता है, वह अपने लिए आग इकट्ठी कर रहा है। अब बहुत इकट्ठी कर ले या थोड़ी।
2. सबसे बुरा आदमी वह है, जो अल्लाह का वास्ता देकर माँगता है और फिर भी उसे कुछ नहीं मिलता। देखो, अल्लाह का वास्ता देकर लोगों से मत माँगो। अल्लाह ही से माँगो।

आपसी बरताव

1. जो छोटों पर दया और बड़ों का सम्मान नहीं करता, वह हममें से नहीं।
2. तुम धरती वालों पर दया करो, अल्लाह आकाश पर दया करेगा।
3. एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिए दर्पण है। अगर किसी भाई में कोई कमी देखो, तो उसे बतला दो।
4. परस्पर प्रेम और सहानुभूति के मामले में दीवार से सबक़ लो, जिसकी एक ईंट दूसरी ईंट को मज़बूत बनाती है।

5. हँसकर मिलना, अच्छी बात कहना, बुरी बात से रोकना, भूले-भटके को रास्ता बताना, कम देखने वाले को राह बताना, रास्ते से काँटा, पत्थर और हड्डी आदि हटाना तथा किसी को पानी का डोल निकाल देना, यह सारे काम सदक़ा जैसे हैं।
6. सलाम करना, ग़रीबों को खाना खिलाना और रात को छुपकर नमाज़ पढ़ना इसलाम की अच्छी निशानियाँ हैं।
7. जिसका व्यवहार अच्छा है, क़यामत के दिन वही मुझे प्यारा और मेरे पास होगा। जिसका व्यवहार बुरा है, मैं उससे नाराज़ और दूर रहूँगा। जो लोग बेहूदा बकते, गपें मारते और अभिमान करते हैं, मैं उनसे अप्रसन्न हूँ।
8. अच्छी हालत में रहना अभिमान नहीं है। लोगों को तुच्छ जानना और सत्य का खंडन करना अभिमान है।
9. सबसे प्रेम रखो। इसी में आधी बुद्धि है।
10. यह मत कहो कि अगर लोग हमसे अच्छा बरताव करेंगे, तो हम भी अच्छा बरताव करेंगे। तथा अगर वह अत्याचार करेंगे, तो हम भी अत्याचार करेंगे। बल्कि ऐसी आदत बनाओ कि यदि लोग तुमसे अच्छा बरताव करें, तो उनकी भलाई करो और अगर वह तुम्हारी बुराई करें, तो तुम उनपर अत्याचार न करो।

ज्ञान का महत्व

1. जो ज्ञान की तलाश में चलता है, उसके लिए जन्नत की राह आसान हो जाती है।

2. तुम जब तक ज्ञान की तलाश में हो, अल्लाह के मार्ग मे हो।
3. ज्ञान की तलाश में रहने से इनसान के पिछले गुनाह मिट जाते हैं।
4. अनुसंधान का शौक़ आधा ज्ञान है।
5. हिकमत तथा ज्ञान को अपना खोया हुआ सामान समझो, जहाँ मिल जाए ले लो।
6. जो ज्ञान को छुपाता है, उसे आग की लगाम पहनाई जाएगी।
7. जहाँ ज्ञान और सहनशीलता एकत्र हों, उनसे बेहतर कोई दो चीज़ें कहीं एक जगह इकट्ठी नहीं मिलेंगी।

दास, दासी और सेवक के साथ बरताव

1. दासी तथा दास तुम्हारे भाई हैं। अल्लाह ने उनको तुम्हारे मातहत किया है। जिसके पास दासी अथवा दास हो, वह उसे बराबर का खिलाए और बराबर का पहनाए, शक्ति से बढ़कर उससे काम न ले और कठिन काम में ख़ुद उसकी मदद करे।
2. दासी अथवा दास को मुक्त करना स्वयं को दौज़ख़ से छुड़ा लेना है।
3. एक व्यक्ति ने पूछाः सेवक को कहाँ तक माफ़ किया जाए? तो आपने फ़रमायाः "दिन में सत्तर बार।"

अंत

दुआ

- दुआ बंदे को अल्लाह से मिलाती है, मुसीबत के समय दिल को सांत्वना देती है, ख़ुशहाली के समय इनसान को अपने कर्त्वयों से ग़ाफ़िल नहीं होने देती। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जो दुआएँ हमें सिखलाईं हैं, उनसे इसलाम की शिक्षा भी मिलती है और दिलों का ज़ंग भी साफ़ होता है। जो दुआएँ यहाँ लिखी जा रही हैं, बेहतर होगा कि उन्हें याद कर लो और अल्लाह से उसी तरह दुआ किया करोः
- मैं एकाग्र होकर धरती तथा आकाश के रचयिता की ओर अपना मुँह करता हूँ। मैं उसके बराबर का किसी को नहीं समझता। (सूरा अल-अनआमः 79)
- मेरी शारीरिक इबादतें और धन के सदक़े, मेरा जीना और मेरा मरना संसार के मालिक अल्लाह के लिए है। बेशक मुझे आदेश है कि मैं किसी को उस प्रभु के बराबर न समझूँ और अपने सर को उसी की दरगाह पर रखूँ। (सूरा अल-अनआमः 162-163)
- ऐ अल्लाह, ऐ बादशाहों के बादशाह और पालनहार, तेरे सिवा कोई भी नहीं जिसकी बंदगी की जाए। मैं तेरा बंदा हूँ। अपनी जान पर अत्याचार कर चुका हूँ। अब अपने गुनाहों का इक़रार करता हूँ। तू

मेरे तमाम गुनाहों को माफ़ कर दे, क्योंकि तेरे सिवा गुनाहों को और कोई माफ़ नहीं कर सकता। (सहीह मुस्लिम, अली रज़ियल्लाहु अंहु से वर्णित)

- ऐ मेरे मालिक, मुझे अच्छे स्वाभाव और नेक आदतों पर चला। बेशक ऐसा मार्गदर्शन तू ही कर सकता है। ऐ मेरे मालिक, मुझे बुरे स्वभाव और कुआचरण से बचा। बेशक तू ही मुझे इससे बचा सकता है। मैं तेरे सामने उपस्थित हूँ और तेरा आदेश मानने को तैयार हूँ। (सहीह मुस्लिम, अली रज़ियल्लाहु अंहु से वर्णित)
- ऐ मालिक, भलाई और नेकी के सभी प्रकार तेरे हाथ में हैं और बुराई को तुझसे लगाव नहीं। ऐ मालिक, बड़ी बरकतों और ऊँचाइयों वाले, मैं तुझसे क्षमा का प्रार्थी हूँ। (सहीह मुस्लिम, अली रज़ियल्लाहु अंहु से वर्णित)
- ऐ अल्लाह, मैं तुझे सजदा करता हूँ, तुझपर ईमान रखता हूँ और तेरे सामने अपना सर झुकाता हूँ। मेरा चेहरा उसे सजदा करता है, जिसने मुझे पैदा किया और मेरी सूरत बनाई तथा जिसने चेहरे के साथ सुनने वाले कान और देखने वाली आँखें लगाईं। अल्लाह बड़ी बरकतों वाला है। पैदा करने की शक्ति उसके अंदर सबसे अधिक और उत्तम है। (सहीह मुस्लिम, अली रज़ियल्लाहु अंहु से वर्णित)
- ऐ अल्लाह, मेरा ज़ाहिर और मेरा अंतरात्मा तुझे सजदा करता है, मेरा दिल तुझपर ईमान रखता है और मैं तेरी नेमतों का इक़रार करता हूँ।

- ऐ अल्लाह, मैं तुझसे चाहता हूँ कि कारोबार में मुझे स्थिरता दे और इरादे में नेकी प्रदान करे। मुझे सामर्थ्य दे कि तेरी नेमतों का शुक्र करूँ और अच्छी तरह तेरी इबादत करूँ। ऐ अल्लाह, मेरे दिल को सब कमियों से पवित्र कर दे और ज़ुबान को सच्चाई सिखला दे। (सुनन नसाई, शद्दाद बिन औस से वर्णित)
- ऐ अल्लाह, मेरे दीन को सँवार दे, जिसमें मेरा पूरा-पूरा बचाव है और मेरी दुनिया को सँवार दे, जिसमें मेरा गुज़ारा है। (सहीह मुस्लिम, अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अंहु से वर्णित)
- ऐ अल्लाह, मुझे ऐसी रोज़ी दे जो पाक हो, ऐसा ज्ञान दे जो लाभदायक हो, ऐसे अमल का सामर्थ्य दे जो तेरे निकट ग्रहणयोग्य हो।
- ऐ अल्लाह, मैं विवशता, सुस्ती, कायरता, कंजूसी, अत्यधिक कमज़ोरी, दुर्बलता और क़ब्र की यातना से तेरी शरण माँगता हूँ। (मिश्कात, साद रज़ियल्लाहु अंहु से वर्णित)
- ऐ अल्लाह, मेरे दिल को परहेज़गारी दे तथा उसे पवित्र कर दे। तू ही सबसे बढ़कर उसे पवित्र बना सकता है और तू ही मेरी जान का मालिक और काम बनाने वाला है।
- ऐ अल्लाह, जिस ज्ञान में लाभ न हो, जिस दिल में तेरी बड़ाई न हो, जिस आत्मा में निस्पृहता न हो और जो दुआ क़बूल न होती हो, मैं उन सब से तेरी पनाह चाहता हूँ।

- ऐ अल्लाह, हमारे दिलों में प्रेम भर दे, हमारी परिस्थितियों को सही कर दे, हम को सुरक्षा के मार्ग पर चला और हमको अंधेरे से निकालकर रोशनी दिखा।
- ऐ अल्लाह, हमें खुली और छुपी बेहयाई से पाक कर दे और हमें हमारे कान, आँख, दिल तथा बीवी-बच्चों में बरकत दे, हमपर दया कर और हमें अपनी नेमत का शुक्र अदा करने वाला बना। हम तेरी नेमतों का लाभ उठाते रहें और तेरी प्रशंसा करते रहें और तू हमपर अपनी नेमतों को पूरा करता रहे।

آمین یا رب العالمین

(क़ाज़ी) मुहम्मद सुलैमान